हम लोग कुल 14 चूहे हैं। मां-पिता, बाबा और दादी और हम दस।

शुरू में हम जंगल में बहुत दूर तक चलते गए। हम 14 चूहे घर बनाने जा रहे थे।

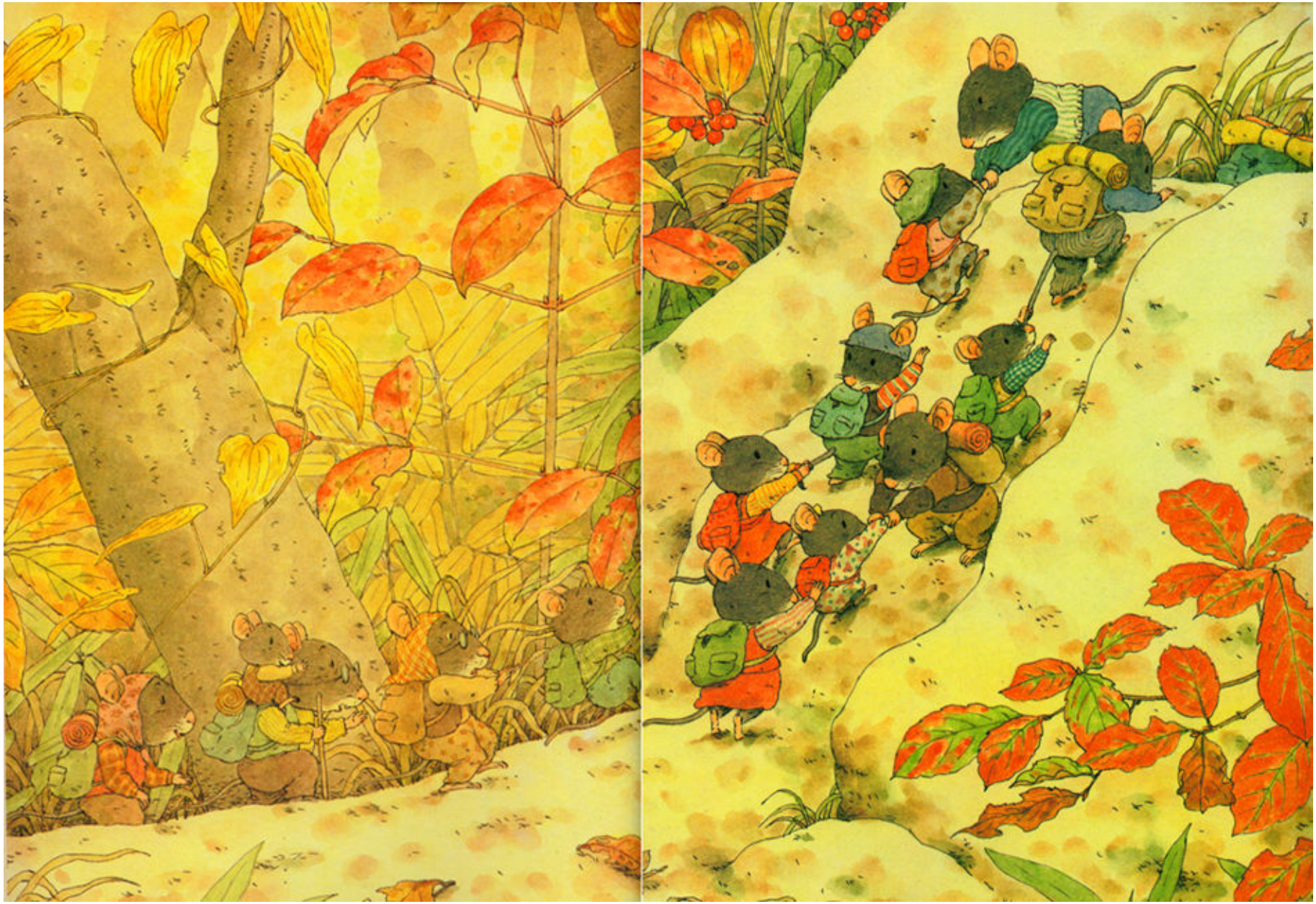

हां, हां चलते चलो। उफ! ओह! कौन है जो लड़खड़ाकर गिरने को है।

शी! शी! यदि उस लकड़बघ्घे ने हमें देख लिया तो हम मुसीबत में पड़ जाएंगे। लकड़बघ्घे बद्सूरत होते हैं क्योंकि वे चूहे खाते हैं।

मजबूते से पकड़े रहो! सतकी! तुम लगभग उस पार जा चुकी हो! वह हट्टा कट्टा साथी कौन है जो रस्सी का आखरी छोर पकड़े है?

हू! हू! कहीं उल्लू बोल रहा है। संभल कर! मुझे उम्मीद है कि हम एक नया घर जल्दी ढूंढ लेंगे।

आखिर हमने एक शानदार पेड़ की जड़ ढूंढ ही ली। यही हमारा नया घर होगा। अरे वहां तो एक खिड़की भी है। वह बाहर कौन झांक रहा है।

सब मिलजुल कर अपना नया मकान बनाने के लिए काम कर रहे हैं। चलो चलकर बहुत सारे बांस और काठ-कबाड़ लाएं।

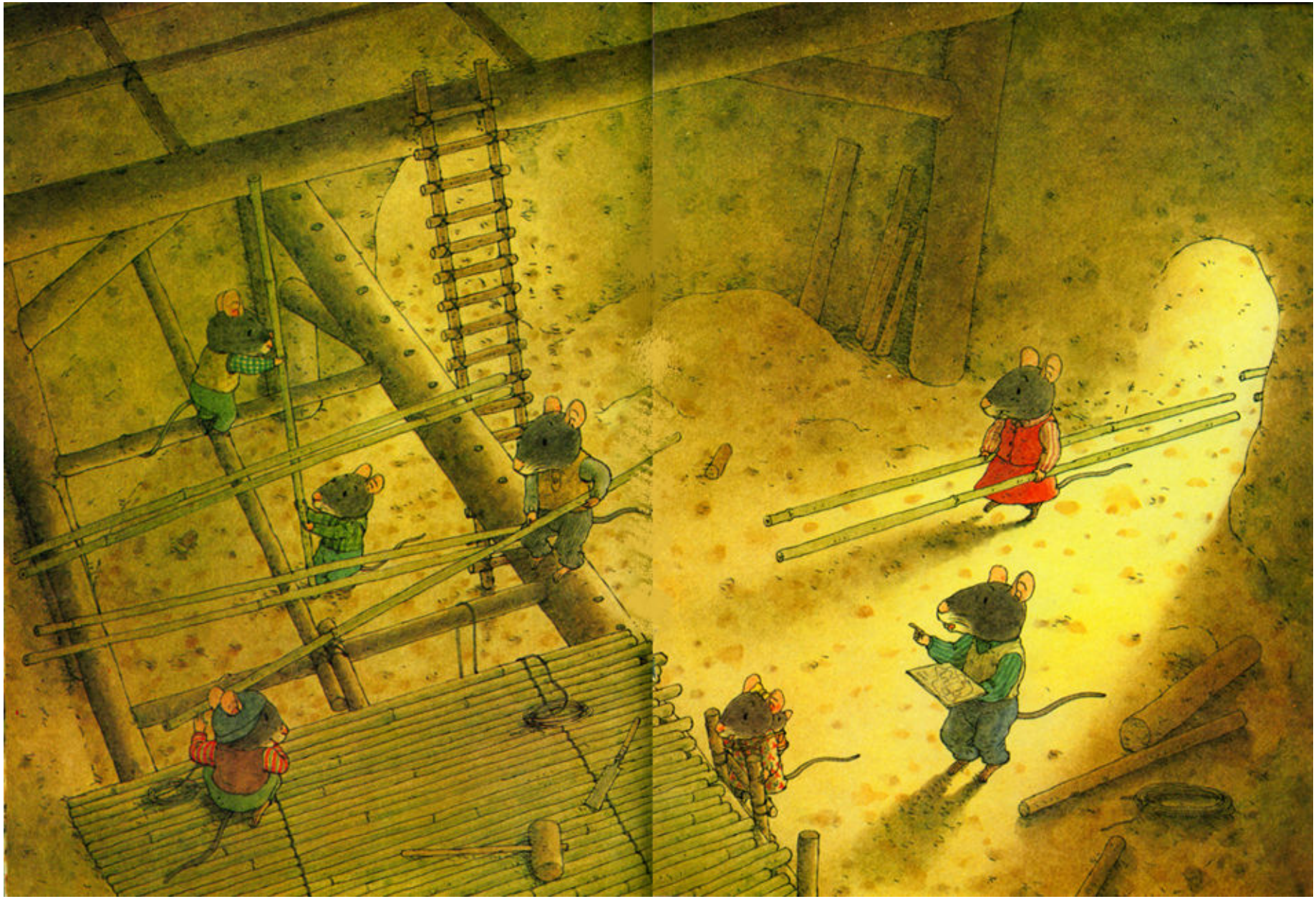

बड़े चूहे भूतल पर, बच्चे पहली और दूसरी मंजिल पर। और रसोई घर उस तरफ बना लें।

आराम का समय है। दादी चाय ला रही हैं। हमारे पास हरेक के लिए प्याले तो हैं न?

मां कहती है कि अच्छा तो यह होगा पानी सीधा घर में आए। उसी में सब तैयार है - जांच करके देखें। वह कौन है जो इशारा कर रहा है?

खुल गया! हमारा अपना पानी का पाईप। पेड़ पर चढ़कर कौन हल्ला कर रहा है?

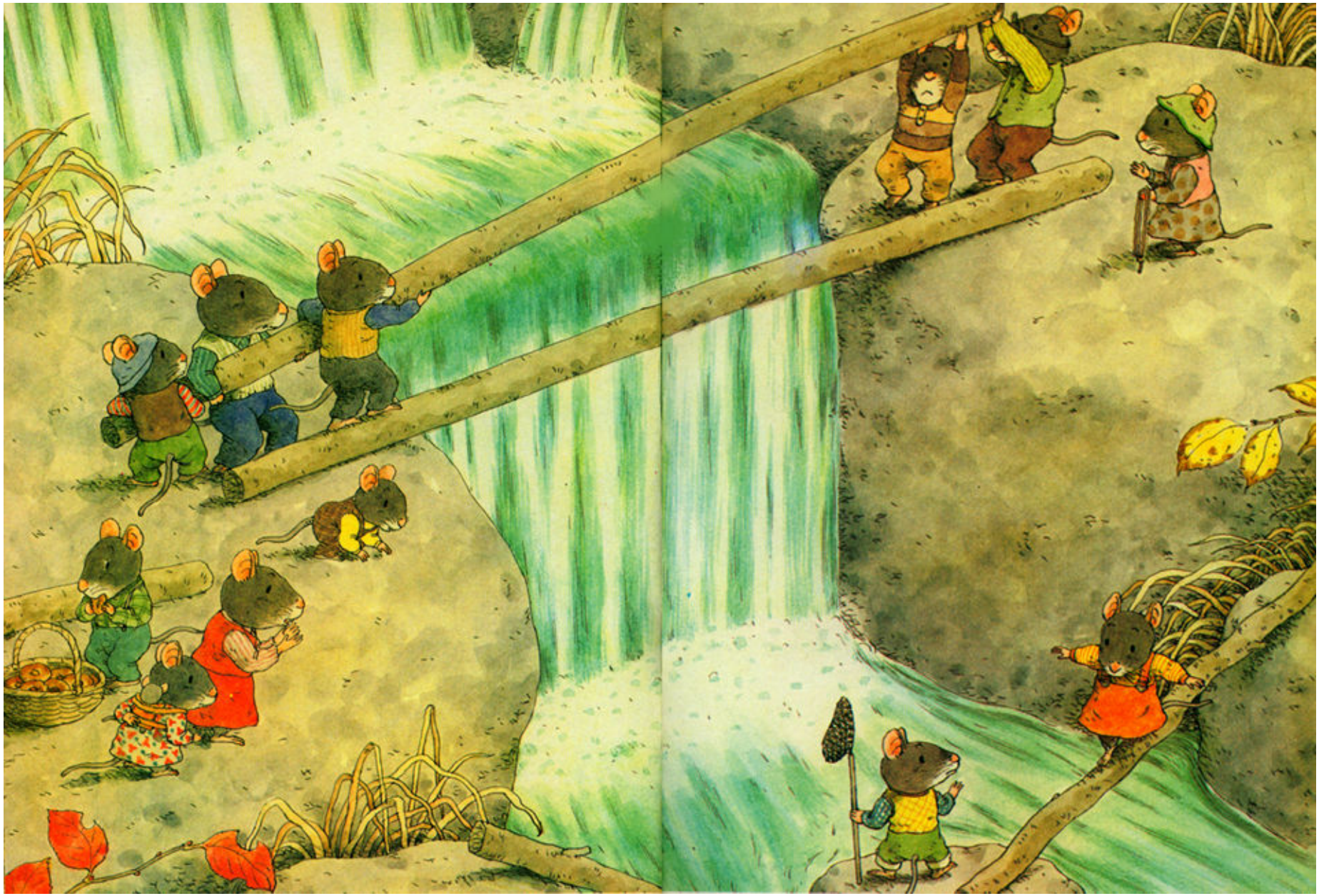

चल कर एक पुल तैयार करें, ताकि हम नदी के दूसरे किनारे से बेर बीन कर ला सकें। अरे, यह तीसरी हमारे खाने के लिए क्या ले आई?

अरबी, रतालू, अखरोट, खूमी आदि। हम काफी खाना इकट्ठा कर चुके हैं।
हमारे पास सर्दी के मौसम में भी बहुत कुछ खाने को होगा।

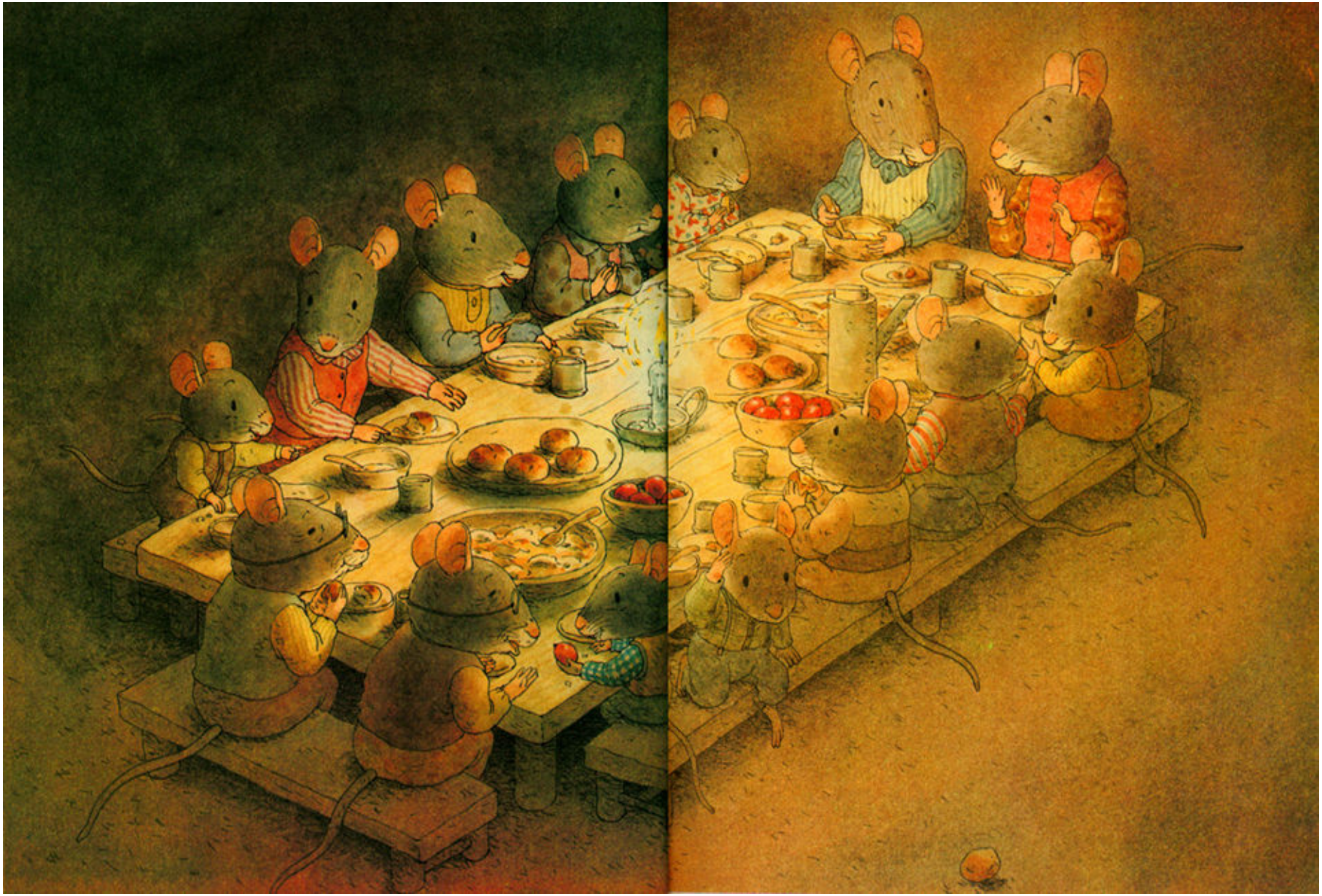

हम एक घर, एक पुल, यहां तक कि पानी का पाईप भी बना चुके हैं। सभी ने कड़ी मेहनत की है। रात का खाना कितना मजेदार है।

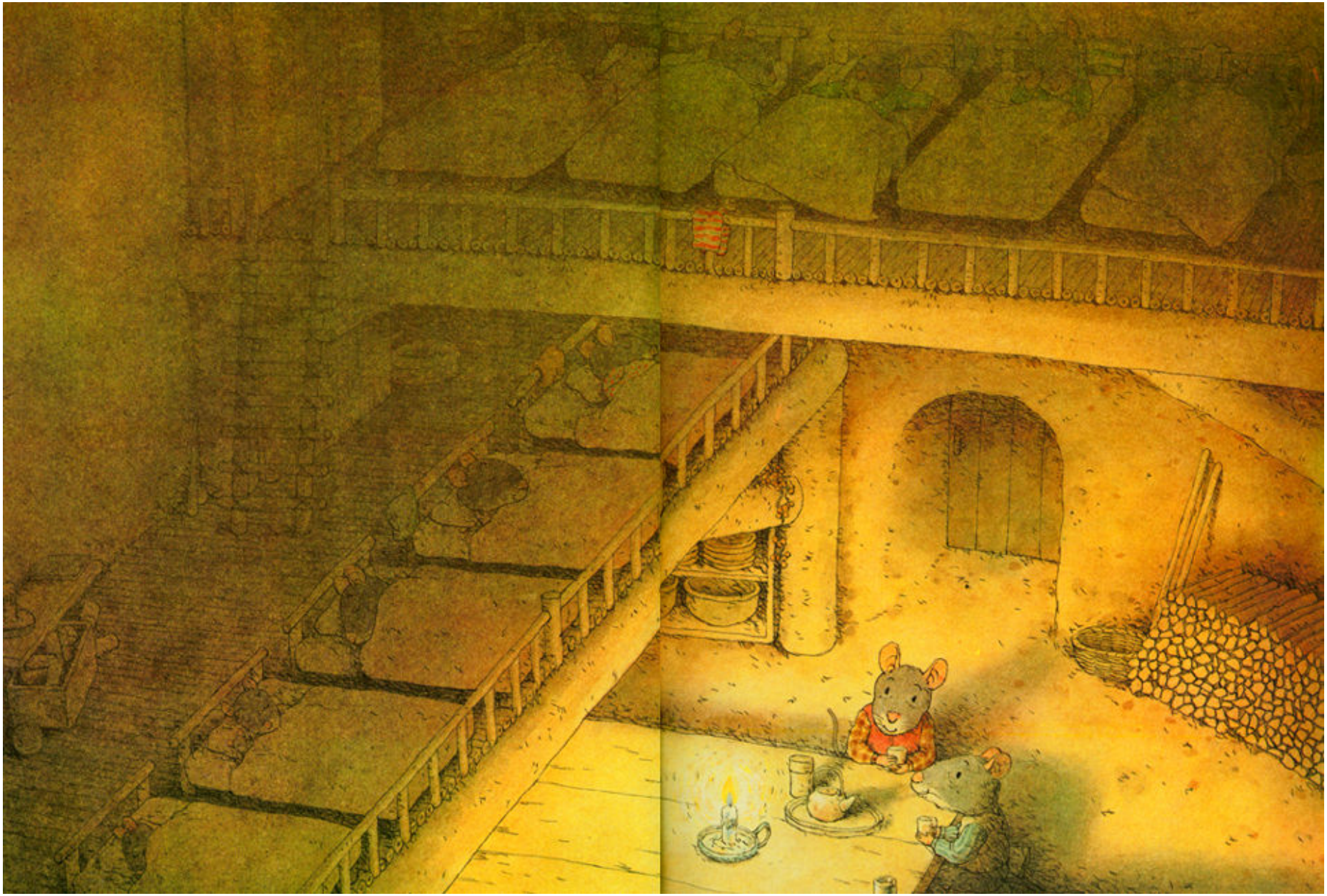

सभी बच्चे मीठी नींद सो रहे हैं। दादा और दादी भी सोने चले गए हैं। रात पूरी तरह खामोश है।